अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

श्रीकान्त वर्मा की क वता में जीवन - दृष्टि और साहित्यिक -दृष्टि:-

डॉ. बी. आर. ठाकुर (प्राध्यापक-हिन्दी)

देवता देवी महिला महा वद्यालय बघौचघाट अहिरौली देवीया

पन कोड-274404

सन् 1956 में नागपुर वश्व वद्यालय से एम०ए०के बाद श्रीकान्त वर्मा ने अपना साहित्यिक जीवन नई दिल्ली से आरम्भ कया। नई दिशा' और 'कृति' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन कया। कई वर्ष स्वतन्त्र लेखन के बाद 1964 में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया ' संस्थान में नियुक्ति हुई जहाँ वे काफी लम्बे अरसे तक समाचार साप्ताहिक 'दिननमान' के वशेष संवाददाता रहे ।

भटका मेघ, दिनारम्भ मायादर्पण (क वताएँ), मगध जलसाघर (1973), साहित्य आकादमी पुरस्कार, गरुण कसने देखा (काव्य संग्रह). झाड़ी संवाद (कहानियाँ), दूसरी बार (उपन्यास) जिरह (आलोचना), बीसवीं शताब्दी के अंन्धेरे में (साक्षात्कार), प्रसंग (व वध लेखन), फँसने का दिनः आन्दे वोनेस्की की क वताएँ (अनुवाद) आदि इनकी रचनाएँ है ।

श्रीकान्त वर्मा की रचनाएँ भारतीय साहित्य में एक नई शुरुआत है । साठ-सत्तर के दशक में लखी गई क वताओं ने हिन्दी क वता को पुनरुज्जीवन दिया 'जलसाघर' की क वताएँ उनकी पछली क वताओं का उपसंहार कर हिन्दी क वता को एक और अन्दाज तथा एक और अर्थ प्रदान करती है।

अपने समय के क वयों में श्रीकान्त वर्मा का अन्दाज बिल्कुल अलग तरह का है जो अपने पाठकों को चमत्कृत करता है । उनकी क वताएँ भाषा को नंगा करती प्रतीकों चत्रों और मथकों को एक दूसरे से वरुद्ध स्था पत कर नाटकीयता उत्पन्न करती है और मनुष्य के अन्त र्वरोधी संसार की बुनियादी त्रासदी को प्रस्तुत करती है ।

.

श्रीकान्त वर्मा हिन्दी के नायाब क व थे जितना ध्यान उन पर जाना चाहिए था उतना नहीं गया। नई वे छोटे पड़ते थे। 1931 में बिलासपुर में पैदा हुए ये पत्रकार भी थे । 'दिनमान' साप्ताहिक पत्रिका दिल्ली में 10- 12 वर्षों तक काम कया । सत्ता के करीब होने पर उन्हे बहुत नुकसान उठाना पड़ा ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

राजनीति में रहकर अन्त र्वरोधों को प्रामा णक प्रताल करने वाला 'मगध' को याद कया जाता है । उनका पहला काव्य - संग्रह 1957 में 'भटका - मेघ 'आया । जिसमे प्रकृति थी, कस्बा था, लोग थे, हमारे सामने आये । 'भटका - मेघ' में युवा क व की रचनात्मकता कतने सघन व ताजगी लए आता है ।

श्रीकान्त वर्मा का रचनाकार जीवन हिन्दी के कई अन्य प्रतिभाशाली क वयों की तरह बड़े शहरों की चकाचौध से

-

बढे बिलासपुर में उनकी शक्षा -

दूर मध्य प्रदेश के छोटे से कस्बे बिलासपुर से शुरु हुआ। वे निम्नवर्गीय परिवेश में पले दीक्षा हुई और वही उन्होने क वता लखना भी शुरू कया क्यों क यही 'मुक्तिबोध' भी लखे रहे थे और हरिशंकर परसाई भी ।

स्वाधीनता संग्राम की आँच अभी तक महसूस होती थी और उस दौर के प्रायः हर रचनाकार ने मार्क्सवाद से संबंध जरुर जोड़ा। प्रगतिवादी आन्दोलन का प्रभाव भी था । साहित्यिक मान्यताओं के तीव्र बाद-

ववाद के स्वर गुँजते सुनाई दे रहे थे ।

श्रीकान्त वर्मा द्वारा नामवर संह को लखे इस पत्र में देखा जा सकता है, "मुझे अक्सर ऐसा लगता है क इतिहास का दायित्व

. निरन्तर मेरा पीछा करती रहती है।" यह वाक्य श्रीकान्त वर्मा की रचनाकार दृष्टि को हम पर आज जितना है समझने के लहाज से महत्वपूर्ण है । इतिहास के गुरुत्तर दायित्व के अहसास के साथ नितांत व्यक्तिगत संवेदनाएँ जुड़ी हुई है । इसी लए इसी पत्र में वे आगे लखते है "जब कभी ऐसी रचना पढ़ता हूँ जिससे मानव - भावना और मानव-संघर्ष के गौरव को अ भव्यक्ति मली है तो सहसा ही ऐसा लगता है- यही है जिसे वाणी देने के लए मेरी कलम छटपटा रही है और मेरे ही एक

अंश को अ भव्यक्ति मली है।"

--

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

श्रीकान्त वर्मा स्वयं मानव - यातना और मानव संघर्ष के गौरव की क वताएँ लखना चाहते थे । श्रीकान्त वर्मा अपने युग और समाज को कस प्रकार देख रहे थे । वे लखते है, "1960 के आस-पास मेरे चारों ओर मृत्यु की सर्फ गरीबी, भूखमरी और असहायता से उत्पन्न मृत्यु नही बल्कि ऐसी मृत्यु जिसे सैकड़ो नामों से पुकारा जा सकता है, जैसे क आत्मनिर्वासन, सामाजिक पलायन, प्रेम वफलता, मूल्यहीन संसार मे जाने का एहसास माननीय क्रूरता, करुणा वहिनता, चारो ओर 'मारो' या मार दिया गया का शोर । एक संवेदनशील व्यक्ति को जो चोटे लगती है उन सबका बयान इन पंक्तियों में पढ़ा जा सकता है। गरीबी, भूखमरी, असहायता के प्रमाण बड़ी संख्या में वपन्नता में मल रहे लोगों की जिन्द गयों मे थे ।

श्रीकान्त वर्मा इस अभाव को वाणी देना चाहते थे। पहले क वता संग्रह 'भटका मेघ' की भू मका में उन्होने उन साहित्यिक- प्रवृतियों पर आक्रामण कया है जो 'आज के साहित्य' को 'व्यक्तित्व की खोज' को परिभाषा करना चाहती है। एक आदमी का जीवन संघर्ष, उसके अंत और मनोपीड़ाएँ स्वयं में महाकाव्य की क्षमता रखती है। श्रीकान्त वर्मा की मान्यता थी क दुःख, नैराश्य, कुटुता, घृणा तथा कुण्ठा के साथ जीवन में सौन्दर्य भी हैं, प्रेम और आस्था के स्वर भी है।

श्रीकान्त वर्मा ने अपने काव्य संग्रह की भू मका में कहा है क, "हर युग का प्रगतिशील साहित्य एक नऐ एवं जीवन्त व्यक्तित्व को स्था पत करता है । प्रश्न यह है क आज की जीवन्त क वता में कौन सा व्यक्तित्व अभर रहा है? आज के जीवन्त मूल्य कौन से है ? ये मूल्य क्या अकेले एक व्यक्ति के है या सम्पूर्ण समाज के ? तारसप्तक का प्रकाशन हो चुका था सर्फ 'राहों का अन्वेषी ' कहा था | श्रीकान्त वर्मा ने कहा क सर्फ राहो का अन्वेषी ' कह देने से काम नहीं चलता। वे राहें कौन सी है? उनका अन्वेषण कैसे कया जा रहा है? क्या इस खोज के लए कोई रोशनी जलाई गई है? राहों का अन्वेषण करने के लए भी कसी मशाल की जरुरत होती हैं अन्धकार के खण्डहरों में भटककर ' चमगादड़ के पंखो की फड़फड़ाहट को ही जीवन का एक मात्र चन्ह मान लेना एक और बात है की खोज करना एक दूसरी बात । देखना कठिन नही क अपनी ही कुण्ठाओं में घुलते रहने की जगह वे सामाजिक मुक्ति के प्रयासों में शा मल होने को रंचनाकार के दायित्व के रुप में चन्हित करते है- पल की खोज का अर्थ आत्मा की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

मुक्ति नही, एक सामाजिक इकाई के रुप में मनुष्य के मुक्ति के मार्ग की खोज से है । इस लए रचनाकार को ठोस वास्त वक शक्तियों के साथ एक संबंध भी बनाना पड़ता है।

श्रीकान्त वर्मा की इन साहित्यिक मान्यताओं का कुछ संबंध उनके अपने समय के और उन्ही के प्रदेश के मूर्धन्य मार्क्सवादी क व गजानन माधव मुक्तिबोध के साथ उनकी निकटता से भी है। जैसा वद्वानों ने ठीक ही लक्ष्य कया है, यह संबंध सैद्धान्तिक स्तर पर भी था। मुक्तिबोध के नजदीक जाने पर उनके जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों से स्वयं को असम्पृक्त रखना कसी भी ईमानदार व्यक्ति के लए असम्भव था । श्रीकान्त वर्मा के साथ भी यही स्थिति थी । डॉ० नन्द कशोर नवल ने श्रीकान्त वर्मा पर अपने निबंध में लखा है, "मुक्तिबोध से प्रभा वत होने का मतलब था नई क वता के अन्त र्वरोध को समझना और प्रगतिशील आलोचको की तरह नई क वता को नकार कर नही, बल्कि स्वीकार कर नई सृजनशीलता के धरातल पर प्रगतिशील क वता की रचना करना।" डॉ० नन्द कशोर नवल ने अनुमान कया है क नरेश मेहता के साथ नई दिल्ली से 'कृति' की शुरुआत के पीछे मुक्तिबोध की प्रेरणा काम कर रही होगी । प्रगतिशीलता की एक नई परिभाषा करने की को शश मुक्तिबोध कर रहे थे और उसमें वे साथी भी खोज रहे थे । श्रीकान्त वर्मा स्वयं को इन आरम्भिक वर्षो में वामपंथी मानते थे और यह बताना

चाहते थे क सच्ची व्यक्तिगत स्वाधीनता की सही परिकल्पना उन जैसे क वयों के पास है, व्यक्तिगत स्वाधीनता का ढोल पीटने वाले व्यक्तिवादियों के बीच नही । यहाँ ये स्पष्टतः स्वयं को वैसे लेखकों से अलग करते हुए दिखते है जो साहित्य में तटस्थता के सद्धान्त को प्रतिपादित कर रहे थे।' कृति' के दूसरे सम्पादक नरेश मेहता के तटस्थता एक सैद्धान्तिक स्वीकृति ' शीर्षक सम्पादकीय की जिम्मेदारी लेने से इनकार करते हुए डॉ० नामवर संह को उन्होने पत्र लखा, "राजनीति में तटस्थता का जो भी महत्व हो और है साहित्य में तटस्थता जैसी कोई चीज नही । असल में यह प्रश्न क मटमेंट का है। आज प्रगतिशील लेखक संघ जैसी कोई चीज नही ।

..

श्रीकान्त वर्मा के 'भटका मेघ' से लेकर 'मगध' और 'गरुड़ कसने देखा है' तक की काव्य यात्रा से गुजरने पर उनके काव्य की राजनीतिक संवेदना को पहचानना कठिन नही है। ले कन यह श्रीकान्त वर्मा की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

नितान्त निजी राजनीतिक संवेदना है । जो घरेलू अनुभवों, अभावो, पीड़ाओं, परिवारिक सफलताओ और असफलताओं के साथ इस तरह गुंथी हुई है क यह फर्क करना कठिन है क वह कतनी वैयक्तिक है और कतनी निर्वैयक्तिक निर्वैयक्तिकता उनके काव्य स्वभाव के अनुकूल न थीं ! 'भटका मेघ' का पहला संस्करण 1957 में प्राक शत हुआ था । उनके लगभग 25 साल बाद उसके दूसरे संस्करण की भू मका में श्रीकान्त वर्मा ने लखा 'भटका मेघ' की क वताएँ

. मुझे बहुत दूर की लगती है। ले कन अब उन्हें गौर से पढता हूँ

दोहराता हूँ

तो वे अभी कल की ही बात लगती है- "मेरे घर की बात, मेरे घर के पीछे बहती नदी की बात, जंगलो

#

में गुजरे

मेरे बचपन की बात पहाड़ो के समक्ष अपने छुटपन की बात ।" 'भटका मेघ' और 'सरहद' की क वताएँ इसी पर रची गई इस लए उनमें आशा और आस्था का एक सरल निर्दोष स्वर सुनाई पड़ता है।

भावभूमी

वजय

एक आलोचक ने लखा है क, " मुक्तिबोध ने यथार्थ को उसकी जरिलता के साथ आत्मसात कर मनुष्यता के अ भयान में अपनी अखण्ड आस्था का परिचय दिया, वहाँ श्रीकान्त वर्मा ने सरल ढंग से आशा और वश्वास से युक्त स्वर को अपनी क वता में अ भव्यक्त कया । यह कारण था क मुक्तिबोध का जहाँ अपनी आस्था से मोहभंग नहीं हुआ वहाँ श्रीकान्त वर्मा जिन्दगी के यथार्थ का पहला झटका लगते ही दूसरे छोर पर आ पहुंचे। उन्होने यह भी लखा है क श्रीकान्त वर्मा ने अपनी क वता में मानव यातना का चत्रण नही कया, मानव संघर्ष का भी चत्रण नही कया। ये निष्कर्ष थोड़ी जल्दबाजी से भरे हुए है क्यो क श्रीकान्त वर्मा की क वता मुक्तिबोध से भन्न चरित्र की क वता है । दूसरे मुक्तिबोध पक्के तौर पर मार्क्सवादी थे, वे मार्क्सवाद द्वारा दी गई जो उनके समय प्रायः स्वीकृत थी, सामाजिक वकास

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

क्रम की अवधारणा में वश्वास करते थे। श्रीकान्त वर्मा मोटे तौर पर वापपंथी रुझान के बावजूद मार्क्सवादी न थे और मनुष्य को सामाजिक इकाई मानने के बाद भी उनके सामने वह संगठित जनशक्ति स्पष्ट न थी जो क उनके युग बन्धनों में जकड़े मनुष्य को पूँजीबाद अलगाव और उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने का आश्वासन हो सकती थीं। "

अपने समय के क वयो में श्रीकान्त वर्मा का अन्दाज बिल्कुल अलग तरह का है जो अपने पाठकों को चमत्कृत करता है । श्रीकान्त वर्मा की रचनाएँ मनुष्य की लाचारी, असहायता, घमण्ड, करुणा, आत्मद्रोह को रेखां कत करती हुई मानवीय स्वतंत्रता के प्रश्न को उठाती है । समकालीन मनुष्य की नियति की परिभाषा के लए वे ऐतिहा सक और पौरा णक प्रतीकों,

घटनाओं और शर्तों का प्रयोग करती है।

श्रीकान्त वर्मा की रचनाएँ अपनी मौ लकता स्वकीयता और जातीयता के कारण न केवल अपने देश बल्कि यूरोप व अमेरिका के प्रबुद्ध पाठक वर्ग का ध्यान आकृष्ट कया और वदेशों में समकालीन भारतीय साहित्य को प्रतिष्ठा दी है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

क्रम संख्या	शीर्षक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन वर्ष / प्रकाशक का नाम
1	भटका मेघ (कविताएँ)	श्रीकान्त वर्मा	1957
2	मया दर्पण (कविताएँ)	〃 〃	1967
3	दिनारम्भ (कविताएँ)	〃 〃	1967
4	जलसाघर (कविताएँ)	〃 〃	1973
5	मगध (कविताएँ)	〃 〃	1983
6	गरुड़ किस ने देखा है (कविताएँ)	〃 〃	1986
7	दूसरी बार (उपन्यास)	〃 〃	1968
8	झाड़ी (कहानी संग्रह)	〃 〃	1964
9	संवाद (कहानी संग्रह)	〃 〃	1969
10	घर (कहानी संग्रह)	〃 〃	1981
11	दूसरे के पैर (कहानी संग्रह)	〃 〃	1984
12	अरथी (कहानी संग्रह)	〃 〃	1988
13	ठंड (कहानी संग्रह)	〃 〃	1989
14	वास (कहानी संग्रह)	〃 〃	1993
15	साथ (कहानी संग्रह)	〃 〃	1994
16	अपोलो का रथ (यात्रा वृतांत)	〃 〃	1973
17	जिरंह (आलोचना)	〃 〃	1975
18	बीसवीं शताब्दी के अन्धेरे में (साक्षात्कार)	〃 〃	1982
19	संकलन (प्रसंग)	〃 〃	-------
20	'फैसले का दिन' हसी कवि आन्द्रेवेज्नेसेंस्की की कविता का अनुवाद	〃 〃	-------